Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

शनि स्तोत्रम्

Kirtikar Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

'शिव' ग्रन्थमाला : ग्रन्थाङ्क-२

महाराजदशरथकृतं

शनिस्तोत्रम्

'शिवदत्ती'-भाषाटीका-सहितम्

सम्पादक तथा टीकाकार

व्याकरणाचार्य-साहित्यवारिधि-तन्त्ररत्नाकर

आचार्य पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्री

(प्रादेशिक सरकार द्वारा सम्मानित)

प्रकाशक

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी-१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

प्रकाशक :
श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार
कचौड़ीगली, वाराणसी-१
✆ : 2392543, 2392471

सर्वाधिकार सुरक्षित

तृतीय संस्करण : १९९८
मूल्य : ५/-

मुद्रक : भारत प्रेस
कचौड़ीगली, वाराणसी-१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

दो शब्द

स्तोत्रों की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। *'स्तोत्रं कस्य न तुष्टये'* के अनुसार ऋषि, मुनि, इन्द्रादि देवों ने भी अपने उपास्य देवी-देवताओं की स्तोत्र-द्वारा प्रार्थना की है और पूर्ण सफल हुए हैं । महाराज दशरथ ने भी अपने कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त की है ।

दशरथ कृत इस स्तोत्र को श्रद्धा-भक्ति से जो व्यक्ति नित्यप्रति पाठ करता है, उसको शनि द्वारा किसी प्रकार की भी पीड़ा नहीं होती, यह निश्चित है । क्योंकि,

'ग्रहाः गावो नरेन्द्राश्च ब्राह्मणाश्च विशेषतः ।
पूजिताः पूजयन्त्येते निर्दहन्त्यपमानिताः ।।'

अर्थात् ग्रह, गौ, राजा तथा ब्राह्मण ये पूजा, स्तोत्र-पाठ करने से ही प्रसन्न होते हैं और अपने में अनास्था रखने वालों का विनाश कर देते हैं । अतः अपने को सर्वदा सुखी रखने के लिए इनकी पूजा अवश्य करनी चाहिए । शुद्ध पुस्तक से शुद्ध पाठ-पूजा करने से ही पाठकर्त्ता तथा यजमान दोनों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

का कल्याण तथा शीघ्र फल-प्राप्ति निश्चित है। पाठ के साथ, पाठ करने वाले को अर्थानुसन्धान भी होना परम आवश्यक है। इससे देवताओं में पूर्ण श्रद्धा-भक्ति जागृत होती है। इन सब बातों को ध्यान में रखकर ही, मैंने प्रस्तुत स्तोत्र का यथासाध्य सर्वथा शुद्ध एवं हिन्दी अनुवाद के साथ सर्वोत्तम संस्करण निकालने की चेष्टा की है। इस तरह का सर्वाधिक शुद्ध संस्करण इस स्तोत्र का आज तक कहीं से भी प्रकाशित नहीं था।

इन सभी विशेषताओं के साथ नित्य पाठोपयोगी अन्यान्य स्तोत्रों का भी प्रकाशन इस ग्रन्थमाला द्वारा हुआ है। स्तोत्र-स्नेही पाठक लाभ उठायें। अन्त में, 'करकृतमपराधं क्षन्तुमर्हन्ति सन्तः' इस अभ्यर्थना के साथ, मैं सम्भव त्रुटियों के लिए क्षमा-प्रार्थी हूँ।

—शिवदत्त मिश्र शास्त्री

सी.के. ५/२६ ए. भिखारीदास लेन
ठठेरी बाजार, वाराणसी-१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

।। श्रीः ।।

आचार्य-पण्डित-शिवदत्तमिश्रशास्त्रि-संस्कृतं

शनिस्तोत्रम्

'शिवदत्ती'-भाषाटीका-सहितम्

●

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीशनिस्तोत्रमन्त्रस्य कश्यपऋषि-स्त्रिष्टुप्छन्दः, सौरिर्देवता, शं बीजम्, निः शक्तिः, कृष्णवर्णेति कीलकम्, धर्मा-ऽर्थ-काम-मोक्षात्मक-चतुर्विध-पुरुषार्थ-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

दाहिने हाथ में जल लेकर, 'ॐ अस्य श्रीशनिस्तोत्रमन्त्रस्य०' से 'जपे विनियोगः' तक पढ़कर जल छोड़ दे। इसके बाद न्यास करे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mol

न्यासः

करन्यासः–

शनैश्चराय	अङ्गुष्ठाभ्यां	नमः ।
मन्दगतये	तर्जनीभ्यां	नमः ।
अधोक्षजाय	मध्यमाभ्यां	नमः ।
कृष्णाङ्गाय	अनामिकाभ्यां	नमः ।
शुष्कोदराय	कनिष्ठिकाभ्यां	नमः ।
छायात्मजाय	करतलकरपृष्ठाभ्यां	नमः ।

'शनैश्चराय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' से दोनों अँगूठे का स्पर्श करें । 'मन्दगतये तर्जनीभ्यां नमः' से दोनों अँगूठे की बगल वाली अँगुली का स्पर्श करें । 'अधोक्षजाय मध्यमाभ्यां नमः' से बीच की अँगुली का, 'कृष्णाङ्गाय अनामिकाभ्यां नमः' से बीच की अँगुली के बगल वाली अँगुली को छुए । 'शुष्कोदराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः' से कानी अँगुली को, 'छायात्मजाय करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः' से दोनों हाथों की हथेलियों तथा पीठों का स्पर्श करें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

हृदयादिन्यासः-

शनैश्चराय	हृदयाय	नमः ।
मन्दगतये	शिरसे	स्वाहा ।
अधोक्षजाय	शिखायै	वषट् ।
कृष्णाङ्गाय	कवचाय	हुम् ।
शुष्कोदराय	नेत्रत्रयाय	वौषट् ।
छायात्मजाय	अस्त्राय	फट् ।

दिग्बन्धनम्

ॐ भूर्भुवः स्वः, इति दिग्बन्धनम् ।

इसी प्रकार हृदयादि न्यास भी करे-

'शनैश्चराय हृदयाय नमः' से हृदय, 'मन्दगतये शिरसे स्वाहा' से सिर, 'अधोक्षजाय शिखायै वषट्' से शिखा, 'कृष्णाङ्गाय कवचाय हुम्' से दोनों हाथों की भुजाओं तथा 'शुष्कोदराय नेत्रत्रयाय वौषट्' से दोनों नेत्रों का स्पर्श करे। 'छायात्मजाय अस्त्राय फट्' कहकर दाहिने हाथ की तर्जनी और मध्यमा से बाँये हाथ से ताली बजावे।

'ॐ भूर्भुवः स्वः' पढ़कर दिग्बन्धन करे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

शनिध्यानम्

नीलद्युतिं शूलधरं किरीटिनं
गृध्रस्थितं त्रासकरं धनुर्द्धरम् ।
चतुर्भुजं सूर्यसुतं प्रशान्तं
वन्दे सदाऽभीष्टकरं वरेण्यम् ।।१।।

प्रणम्य देवदेवेशं सर्वग्रह-निवारणम् ।
शनैश्चर-प्रसादार्थं चिन्तयामास पार्थिवः ।।२।।

हाथ में पुष्प लेकर भगवान् शनि का ध्यान करे-

नीलकान्ति वाले, त्रिशूलधारी, किरीट (मुकुट) धारण किये हुए, गीधपर बैठे हुए, सभी को भयभीत करने वाले, धनुषधारी, चार भुजा वाले, शान्त स्वरूप, सभी में श्रेष्ठ, निरन्तर अभीष्ट करने वाले ऐसे सूर्यपुत्र भगवान् शनि को मैं नमस्कार करता हूँ।।१।। राजा दशरथ ने समस्त ग्रहों के निवारक शनि को नमस्कार कर उनकी प्रसन्नता के लिए विचार किया।।२।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

रघुवंशेषु विख्यातो राजा दशरथः पुरा ।
चक्रवर्ती स विज्ञेयः [1]सप्तद्वीपाधिपोऽभवत् ।।३।।
कृत्तिकान्ते शनिं ज्ञात्वा दैवज्ञैर्ज्ञापितो हि सः ।
रोहिणीं भेदयित्वा तु शनिर्यास्यति साम्प्रतम् ।।४।।
शकटं भेद्यमित्युक्तं सुराऽसुरभयङ्करम् ।
द्वादशाब्दं तु दुर्भिक्षे भविष्यति सुदारुणम् ।।५।।

राजा दशरथ रघुकुल में प्रसिद्ध, सातों द्वीपों के स्वामी चक्रवर्ती राजा थे ।।३।। ज्योतिषियों ने उनसे कहा था कि, इस समय शनि कृत्तिका के अन्तिम चरण पर विद्यमान हैं, पर थोड़े दिन बाद रोहिणी शकट का भेदन कर आगे चला जायेगा ।।४।। इस प्रकार रोहिणी शकट के भेदन से देवता तथा असुरों के लिए भी अत्यन्त भयानक बारह वर्ष

१. यद्यपि प्राचीन इतिहास में सात द्वीपों के राजाओं में राजा दशरथ के नाम का उल्लेख नहीं है, किन्तु भावातिरेक में किसी प्रतिलिम्पक ने सम्भव है कि 'सप्तद्वीपाधिप' यह पाठ जोड़ दिया हो ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

एतच्छ्रुत्वा तु तद्-वाक्यं मन्त्रिभिः सह पार्थिवः ।
व्याकुलं च जगद् दृष्ट्वा पौर-जानपदादिकम् ।।६।।
ब्रुवन्ति सर्वलोकाश्च भयमेतत् समागतम् ।
देशाश्च नगरग्रामा भयभीताः समागताः ।।७।।
पप्रच्छ प्रयतो राजा वशिष्ठप्रमुखान् द्विजान् ।
समाधानं किमत्राऽस्ति ब्रूत मे द्विजसत्तमाः ।।८।।

का अकाल पड़ेगा।।५।। महाराज दशरथ ने मन्त्रियों के साथ इस बात को सुना एवं देखा कि पुरवासी तथा जनपद के सहित सभी लोग व्याकुल हो रहे हैं।।६।। उस समय सभी लोग इसी बात की चर्चा कर रहे थे कि यह बहुत बड़ा भय उपस्थित हो गया है । इसलिए सारे देश-नगर एवं ग्राम के सभी लोग भयभीत होकर महाराज दशरथ के पास गये ।।७।। तब महाराज दशरथ ने वशिष्ठ आदि प्रमुख ब्राह्मणों को बुलाकर शनि द्वारा उत्पन्न भय को दूर करने का उपाय पूछा– हे द्विजसत्तम ! यह भय किस प्रकार दूर होगा ? ।।८।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

वसिष्ठ उवाच

प्राजापत्ये तु नक्षत्रे तस्मिन् भिन्ने कुतः प्रजाः ।
अयं योगो ह्यसाध्यश्च ब्रह्म-शक्रादिभिः सुरैः ॥९॥
तदा सञ्चिन्त्य मनसा साहसं परमं ययौ ।
समाधाय धनुर्दिव्यं दिव्यायुध-समन्वितम् ॥१०॥
रथमारुह्य वेगेन गतो नक्षत्रमण्डलम् ।
[1]त्रिलक्षयोजनं स्थाने [2]चन्द्रस्योपरि संस्थितम् ॥११॥

तब वसिष्ठजी ने कहा– हे महाराज ! जब शनि रोहिणी शकट का भेदन करता है, तो प्रजा का सर्वनाश करता है। ब्रह्मा तथा इन्द्रादि देवताओं ने इस योग को असाध्य बताया है। शास्त्रों में शनि के द्वारा उत्पन्न इस भय से रक्षा का कोई उपाय नहीं है।।९।। महाराज दशरथ ने इस बात को विचारकर अपने मन में बड़ा

१. 'सपादयोजनं लक्षं' यह पाठ सर्वत्र मुद्रित प्रति में मिलता है, किन्तु आर्ष ग्रन्थों से विरुद्ध है।
२. यहाँ मुद्रित प्रति में 'सूर्यस्य' यह पाठ भी आर्ष ग्रन्थ विरुद्ध है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

रोहिणी-पृष्ठमासाद्य स्थितो राजा महाबलः ।
रथे तु काञ्चने दिव्ये मणिरत्नविभूषिते ॥१२॥
हंसवर्णहयैर्युक्ते महाकेतुसमुच्छ्रिते ।
दीप्यमानो महारत्नैः किरीटमुकुटोज्ज्वलैः ॥१३॥

साहस उत्पन्न किया। वे अपने दिव्य अस्त्रों से युक्त धनुष को लेकर और रथपर चढ़कर बड़े वेग से तीन लाख योजन चन्द्रमा से भी ऊपर अवस्थित नक्षत्रमण्डल की ओर गये।।१०-११।। महाराज दशरथ रोहिणी से पीछे की ओर जाकर अपने दिव्य रथ में बैठकर आकाश में द्वितीय सूर्य के समान सुशोभित होने लगे। कांचन से बना हुआ उनका वह रथ अनेक रत्न और मणियों से विभूषित था।।१२।। उस रथ में हँस के समान श्वेत घोड़े जुटे हुए थे, उस पर ऊँची ध्वजा फहरा रही थी। महाराज दशरथ उस रथ पर बैठे हुए अनेक प्रकार के रत्नजटित किरीट, मुकुट पहने हुए सुशोभित हो रहे थे।।१३।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

व्यराजत तदाकाशे द्वितीय इव भास्करः ।
आकर्णं चापमाकृष्य सहशस्त्रं नियोजितम् ॥१४॥
कृत्तिकान्तं शनिर्ज्ञात्वा प्राविशत्तां च रोहिणीम् ।
दृष्ट्वा दशरथं चाऽग्रे तस्थौ तु भ्रुकुटीमुखः ॥१५॥
संहारास्त्रं शनिर्दृष्ट्वा सुरा-ऽसुर-विषूदनम् ।
प्रहस्य च भयात् सौरिरिदं वचनमब्रवीत् ॥१६॥

आकाशमण्डल में द्वितीय सूर्य के समान सुशोभित महाराज दशरथ कर्ण पर्यन्त धनुष की डोरी चढ़ाकर और उसपर बाण रखकर शनि की प्रतीक्षा करने लगे॥१४॥ इधर शनि भी कृत्तिका नक्षत्र पार कर जब रोहिणी शकट में प्रवेश करने लगे तो उन्होंने अपने आगे महाराज दशरथ को देखकर क्रोध से अपनी भौंहें चढ़ा ली और वहीं पर रुक गये॥१५॥ शनि ने, देवताओं और असुरों का भी संहार करने वाले दशरथ के जब उस प्रलयंकारी अस्त्र को देखा और भयभीत होकर कुछ हँसते हुए दशरथजी से कहने लगे॥१६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

शनिरुवाच

पौरुषं तव राजेन्द्र ! मया दृष्टं न कस्यचित् ।
देवाऽसुरा मनुष्याश्च सिद्ध-विद्याधरोरगाः ॥१७॥
मया विलोकिताः सर्वे भयं गच्छन्ति तत्क्षणात् ।
तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र ! तपसा पौरुषेण च ॥१८॥
वरं ब्रूहि प्रदास्यामि स्वेच्छया रघुनन्दन ! ।

दशरथ उवाच

प्रसन्नो यदि मे सौरे ! एकश्चाऽस्तु वरः परः ॥१९॥

शनि ने कहा– हे महाराज ! हमने तुम्हारे-जैसा साहसी और किसी को नहीं देखा। देवता, असुर, मनुष्य, सिद्ध, विद्याधर तथा महोरग (महासर्प) ॥१७॥ भी मेरे द्वारा देखे जाने पर भयभीत हो जाते हैं, परन्तु आप मुझे देखकर भयभीत नहीं हुए, इसलिए मैं आपके इस तपस्या तथा पराक्रम पर अत्यन्त सन्तुष्ट हूँ॥१८॥

हे महाराज ! तुम अपनी इच्छानुसार मनमाना वर माँगो, मैं तुम्हें अवश्य दूँगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

रोहिणीं भेदयित्वा तु न गन्तव्यं कदाचन।
सरितः सागरा यावद्यावच्चन्द्रार्कमेदिनी ॥२०॥
याचितं तु महासौरे ! नाऽन्यमिच्छाम्यहं वरम्।
एवमस्तु शनिप्रोक्तं वरं लब्ध्वा तु शाश्वतम् ॥२१॥
प्राप्यैवं तु वरं राजा कृतकृत्योऽभवत्तदा।
पुनरेवाऽब्रवीत्तुष्टो वरं वरय सुव्रत ! ॥२२॥

महाराज दशरथ ने कहा– हे महाराज शनि ! यदि आप मेरे ऊपर प्रसन्न हैं, तो एक सर्वश्रेष्ठ वरदान दीजिए।।१९।। जब तक सरित, सागर विद्यमान हैं तथा जब तक चन्द्रमा, सूर्य एवं पृथ्वी अवस्थित हैं तब तक आप रोहिणी शकट का भेदन न कीजिए।।२०।। हे महाराज ! मैं आपसे यही वरदान चाहता हूँ। और दूसरा कोई वरदान नहीं चाहता। तब शनि ने 'एवमस्तु' (ऐसा ही हो) ऐसा कहकर उन्हें याचित वरदान दे दिया।।२१।। महाराज दशरथ शनि के द्वारा दिये गये इस वर को प्राप्त कर कृतकृत्य हो गये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

प्रार्थयामास हृष्टात्मा वरमन्यं शनिं तदा ।
न भेत्तव्यं न भेतव्यं त्वया भास्करनन्दन ! ॥२३॥
द्वादशाब्दं तु दुर्भिक्षं न कर्त्तव्यं कदाचन ।
कीर्तिरिष्टा मदीया च त्रैलोक्ये [1]स्थापय प्रभो ! ॥२४॥
एवं वरं तु सम्प्राप्य हृष्टरोमा स पार्थिवः ।
रथोपरि धनुः स्थाप्य भूत्वा चैव कृताञ्जलिः ॥२५॥

फिर शनि ने प्रसन्न होकर कहा– हे सुव्रत, महाराज दशरथ ! तुम और भी वरदान मुझसे माँगो ॥२२॥ शनि के इस प्रकार कहने पर महाराज दशरथ ने प्रसन्न होकर प्रार्थना की, कि हे भास्करनन्दन ! तुम आज से इस रोहिणी शकट का भेदन मत करो, भेदन मत करो । और बारह वर्ष का यह घोर दुर्भिक्ष कदापि मत करना, जिससे मेरी कीर्ति त्रैलोक्य में स्थिर रहे ॥२३-२४॥ शनि के द्वारा इस प्रकार वर प्राप्त कर, महाराज दशरथ प्रसन्न होकर रथ पर धनुष रखकर हाथ जोड़ ॥२५॥

१. 'तु भविष्यति' इति पाठान्तरम्।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

ध्यात्वा सरस्वतीं देवीं गणनाथं विनायकम् ।
राजा दशरथः स्तोत्रं सौरेरिदमथाऽकरोत् ॥२६॥

दशरथ उवाच

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च ।
नमः सुरूपगात्राय स्थूलरोम्णे नमो नमः ॥२७॥
नमो नित्यं क्षुधार्त्ताय अतृप्ताय च वै नमः ।
नमः कालाग्निरूपाय कृष्णाङ्गाय च वै नमः ॥२८॥

भगवती सरस्वती, गणनाथ विनायक (दक्षिण सूँड के गणेश) का ध्यान करने के पश्चात् शनि की स्तुति इस प्रकार करने लगे ॥२६॥

महाराज दशरथ ने कहा—कृष्ण वर्ण के लिए मेरा नमस्कार है, नीलवर्ण शनि को मेरा नमस्कार है, शङ्कर सदृश, सुन्दररूप एवं स्थूल बाल वाले शनि को मेरा नमस्कार है॥२७॥ सदैव बुभुक्षित रहने वाले शनि को मेरा नमस्कार है, कभी भी तृप्त न रहने वाले शनि को मेरा नमस्कार है, कालाग्नि स्वरूप शनि को मेरा नमस्कार है, काले शरीर वाले शनि को मेरा नमस्कार है॥२८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

नमो दीर्घाय शुष्काय कालदृष्टे नमो नमः ।
नमोऽस्तु कोटराक्षाय दुर्भिक्षाय च वै नमः ॥२९॥
नमो घोराय रौद्राय भीषणाय कपालिने ।
नमो मन्दगते ! तुभ्यं भानुज ! भयदायिने ॥३०॥
अधोदृष्टे ! नमस्तेऽस्तु संवर्त्तकमयाय च ।
तपसा दग्धदेहाय नित्यं योगरताय च ॥३१॥

लम्बे किन्तु शुष्क शरीर वाले शनि को मेरा नमस्कार है, काल दृष्टि वाले शनि को मेरा नमस्कार है, कोटर सदृश आँख और दुर्भिक्षकारक शनि को मेरा नमस्कार है ॥२९॥ अत्यन्त घोर, रुद्र रूप, भीषण तथा कपाल धारण करने वाले शनि को मेरा नमस्कार है। हे मन्दगते, सूर्यपुत्र, सबको भय देने वाले तुझे नमस्कार है ॥३०॥ नीचे की ओर देखने वाले तथा प्रलयकालीन संवर्त्तक अग्नि के समान शनि को मेरा नमस्कार है। तपस्या से अपने शरीर को जला डालनेवाले, योग में संलग्न शनि को मेरा नमस्कार है ॥३१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

ज्ञानचक्षुर्नमस्तेऽस्तु कश्यपात्मजसूनवे ।
तुष्टो ददासि वै राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ॥३२॥
सूर्यपुत्र ! नमस्तेऽस्तु सर्वभक्षाय वै नमः ।
देवा-ऽसुर-मनुष्याश्च पशु-पक्षि-सरीसृपाः ॥३३॥
त्वया विलोकिताः सर्वे दैन्यमाशु ब्रजन्ति ते ।
ब्रह्मा शक्रो हरिश्चैव ऋषयः सप्ततारकाः ॥३४॥
राज्यभ्रष्टाः पतन्त्येते त्वया दृष्ट्याऽवलोकिताः ।
देशाश्च नगरग्रामा द्वीपाश्चैव तथा द्रुमाः ॥३५॥

ज्ञानचक्षु सूर्यपुत्र शनि को मेरा नमस्कार है। हे भगवन् शनि ! तुम प्रसन्न होने पर राज्य दे सकते हो, पर अप्रसन्न होने पर तुम तत्क्षण राज्य का नाश भी कर सकते हो।।३२।। सबको भक्षण करनेवाले हे सूर्यपुत्र शनि ! आपको नमस्कार है, देवता, असुर, मनुष्य, पशु-पक्षी तथा सरकने वाले सभी सर्पादि जन्तु आपके द्वारा देखे जाने पर दीन हो जाते हैं तथा ब्रह्मा, इन्द्र, विष्णु, ऋषिगण और सप्त तारागण आपकी दृष्टि से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

त्वया विलोकिताः सर्वे विनश्यन्ति समूलतः ।
प्रसादं कुरु हे सौरे ! वरदो भव भानुजः ! ।।३६।।
एवं स्तुतस्तदा सौरिर्ग्रहराजो महाबलः ।
अब्रवीच्च शनिर्वाक्यं हृष्टरोमा च पार्थिवः ।।३७।।
तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र ! स्तोत्रेणाऽनेन सुव्रत ! ।
एवं वरं प्रदास्यामि यत्ते मनसि वर्तते ।।३८।।

देखे जाने पर राज्य-भ्रष्ट हो जाते है । देश, नगर, ग्राम, द्वीप तथा वृक्षादि आपके द्वारा देखे जाने पर समूल नष्ट हो जाते हैं । हे सूर्यपुत्र भगवान् शनि, तुम प्रसन्न हो जाओ । हे भास्कर के अपत्य, तुम वर देने वाले हो जाओ ।।३३-३६।। महाराज दशरथ के द्वारा इस प्रकार स्तुति किये जाने पर, अत्यन्त पराक्रमी शनि देव ने प्रसन्न होकर महाराज दशरथ से कहा–।।३७।। हे राजेन्द्र ! मैं तुम्हारे इस स्तोत्र से अत्यन्त प्रसन्न हूँ, तुम्हारे मन के अनुकूल वर देता हूँ ।।३८।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

दशरथ उवाच

प्रसन्नो यदि मे सौरे ! वरं देहि ममेप्सितम् ।
अद्य प्रभृति पिङ्गाक्ष ! पीडा देया न कस्यचित् ।।३९।।
प्रसादं कुरु मे सौरे ! वरोऽयं मे महेप्सितः ।

शनिरुवाच

अदेयस्तु वरोऽस्माकं तुष्टोऽहं च ददामि ते ।।४०।।
त्वया प्रोक्तं च मे स्तोत्रं ये पठिष्यन्ति मानवाः ।
देवा-ऽसुर-मनुष्याश्च सिद्ध-विद्याधरोरगाः ।।४१।।

दशरथ ने कहा–हे शनिदेव, यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मेरे इच्छित वरदान को दीजिए । हे पीली आँख वाले, आज से आप किसी को पीड़ा मत पहुँचाइए ।।३९।। यही हमारा ईप्सित मनोरथ है, आप मेरे ऊपर प्रसन्न हो जाइए ।

शनि ने कहा–हे दशरथ, यह अदेय वर मैं प्रसन्न होकर तुम्हें दे रहा हूँ ।।४०।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

न तेषां बाधते पीडा मत्कृता वै कदाचन।
मृत्युस्थाने चतुर्थे वा जन्म-व्यय-द्वितीयगे ॥४२
गोचरे जन्मकाले वा दशास्वन्तर्दशासु च।
यः पठेत् द्वि-त्रिसन्ध्यं वा शुचिर्भूत्वा समाहितः ॥४३
न तस्य जायते पीडा कृत्वा वै मम निश्चितम्।
प्रतिमां लोहजां कृत्वा मम राजन् चतुर्भुजम् ॥४४

तुम्हारे द्वारा कहे गये इस स्तोत्र का जो देवत
असुर, मनुष्य, सिद्ध, विद्याधर तथा महोरग पाठ करें
उनको मेरे द्वारा होने वाली पीड़ा कदापि
होगी ॥४१॥ मृत्युस्थान ८, चतुर्थ स्थान ४, ज
लग्न १, एकादश स्थान ११ तथा द्वितीय स्थान
में ॥४२॥ गोचर, जन्मकाल, महादशा तथा अन्तर्दश
में मेरे द्वारा उत्पन्न अनिष्ट शुद्ध मन और पवित्रता
(सबेरे, दोपहर, शाम) तीनों काल में इस स्तोत्र क
पाठ करने मात्र से निश्चय ही नष्ट हो जायेंगे ॥४३
और इस स्तोत्र का पाठ करने वाले को मेरे द्वारा दी जा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

रदां च धनुः-शूल-बाणाङ्कितकरां शुभाम्।
मयुतमेकजप्यं च तद्-दशांशेन होमतः।।४५।।
कृष्णैस्तिलैः शमीपत्रैर्घृतात्तैर्नीलपङ्कजैः।
ायसं शर्करायुक्तं घृतमिश्रं च होमयेत्।।४६।।
ाह्मणान् भोजयेत्तत्र स्वशक्त्या घृत-पायसैः।
ैले वा तिलराशौ वा प्रत्यक्षं च यथाविधिः।।४७।।

ाली पीड़ा कदापि न होगी। हे राजन्, लोहे के चतुर्भुज, रे हाथ में धनुष, शूल, बाण को धारण करने वाली रदायिनी मेरी प्रतिमा का जो लोग पूजन करेंगे, मेरे न्त्र का दस हजार जप कर दशांश-काले तिल, शमी क पत्ते तथा घी में डुबोये हुए नील कमल के पत्ते से जो वन करेंगे तथा मेरे द्वारा उत्पन्न अरिष्ट के विनाश के लिए घी से युक्त शर्करा तथा पायस से होम करेंगे, उन्हें ेरी पीड़ा कदापि न होगी ।।४४-४६।।

अपनी शक्ति के अनुसार घृत से युक्त पायस का ाह्मणों को भोजन कराना चाहिए। तेल, तिल की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

पूजनं चैव मन्त्रेण कुङ्कुमाद्यं च लेपयेत् ।
नील्या वा कृष्णतुलसी-शमीपत्रादिभिः शुभैः ॥४८॥
दद्यान्मे प्रीतये यस्तु कृष्णवस्त्रादिकं शुभम् ।
धेनुं वा वृषभं वाऽपि स-वत्सां च पयस्विनीम् ॥४९॥
एवं विशेष-पूजां च मद्-वारे कुरुते नृप ! ।
मन्त्रोद्धारविशेषेण स्तोत्रेणाऽनेन पूजयेत् ॥५०॥
पूजयित्वा जपेत् स्तोत्रं भूत्वा चैव कृताञ्जलिः ।
तस्य पीडां न चैवाऽहं करिष्यामि कदाचन ॥५१॥

राशि अथवा प्रत्यक्ष मेरी प्रतिमा में शास्त्रानुसार मेरा पूजन करना चाहिए।।४७।।तथा कुंकुमादि का लेप करना चाहिए। मुझे प्रसन्न करने के लिए नीली, कृष्णा तुलसी, समीपत्रादि से पूजन कर।।४८।।काले वस्त्र का दान करना चाहिए। धेनु, बैल, बछड़ा सहित काली पयस्विनी गौ का दान देना चाहिए और मेरी उपर्युक्त विधि से विशेष पूजा शनिवार के दिन करनी चाहिए।।४९-५०।। मेरे मन्त्र तथा इस विशेष स्तोत्र के द्वारा मेरा पूजन करना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

रक्षामि सततं तस्य पीडां चाऽन्यग्रहस्य च ।
अनेनैव प्रकारेण पीडामुक्तं जगद् भवेत् ॥५२॥
वरद्वयं तु सम्प्राप्य राजा दशरथस्तदा ।
मत्वा कृतार्थमात्मानं नमस्कृत्य शनैश्चरम् ॥५३॥
शनैश्चराभ्यनुज्ञातो रथमारुह्य वीर्यवान् ।
स्वस्थानं च गतो राजा प्राप्तकामोऽभवत्तदा ॥५४॥

चाहिए अथवा पूजा कर इस स्तोत्र का हाथ जोड़कर पाठ करना चाहिए । इस प्रकार करनेवाले मनुष्य को मेरी पीड़ा नहीं होती ॥५१॥ मैं अन्य ग्रहों की भी पीड़ा दूर कर ऐसे पुरुष की रक्षा करता हूँ । हे महाराज दशरथ, मेरे अरिष्ट एवं पीड़ा को दूर करने का यही उपाय है ॥५२॥

इस प्रकार महाराज दशरथ शनि के द्वारा दिये गये वरदान को प्राप्त कर, अपने को कृतार्थ समझने लगे तथा शनैश्चर को नमस्कार कर, उनकी आज्ञा ले रथ पर चढ़कर अपनी राजधानी को लौट आये और उनका

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

सर्वसिद्धिमवाप्याथ विजयी सर्वदाऽभवत् ।
कोणस्थः पिङ्गलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रान्तको यमः ।।५५
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलाश्रय-संस्थितः ।
एतानि शनि-नामानि जपेदश्वत्थ-सन्निधौ ।।५६
शनैश्चरकृता पीडा न कदापि भविष्यति ।
अल्पमृत्युविनाशाय दुःखस्योद्धरणाय च ।।५७
स्नातव्यं तिल-तैलेन धान्य-माषादिकं तथा ।
लौहं देयं च विप्राय सुवर्णेन समन्वितम् ।।५८

मनोरथ पूर्ण हो गया।।५३-५४।। शनि की प्रसन्नत
से उन्हें सब प्रकार की सिद्धि मिली तथा वे सर्वदा विजय
रहे। कोणस्थ, पिङ्गल, बभ्रु, कृष्ण, रौद्र, अन्तक, यम
सौरि, शनैश्चर, मन्द तथा पिप्पलाश्रय-संस्थित अर्थ
पिप्पल के आश्रय में रहने वाले शनि के इन नामों क
अश्वत्थ (पीपल) के पास पढ़ने से शनि की पीड़ा कदा
नहीं होती। अल्प मृत्यु के विनाश के लिए तथा श
के द्वारा होने वाले दुःख से बचने के लिए तिल के ते
से स्नान करना चाहिए। धान्य, काली ऊरद, लोहे व

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ानिस्तोत्रं पठेद्यस्तु शृणुयाद् वा समाहितः ।
वेजयं चाऽर्थकामं चारोग्यं सुखमवाप्नुयात् ॥५९॥

इति श्रीमहाराजदशरथकृतं शनिस्तोत्रं समाप्तम् ।

वर्ण से युक्त कर दान देना चाहिए॥५५-५८॥

जो लोग शनिस्तोत्र का पाठ करते हैं अथवा ावधानी से शनि के इस स्तोत्र को सुनते हैं, उनको वेजय, अर्थ, काम, आरोग्य तथा सुख की प्राप्ति होती ॥५९॥

इस प्रकार आचार्य पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्रि-कृत 'शिवदत्ती' भाषाटीका में महाराज दशरथकृत शनिस्तोत्र समाप्त ।

कविंशद्विसाहस्रे विक्रमाब्दे तदन्तिके ।
दिवरिया' मण्डलस्यान्ते 'मझौली' ग्रामवासिना ॥१॥
मश्रेण शिवदत्तेन सम्यक् संशोध्य यत्नतः ।
ानिस्तोत्रस्य सद्व्याख्या शिवदत्त्यभिधाकृता ॥२॥
ग्रहक्रूरशनिर्देवस्तया सम्मोद्यतां सदा ।
ेन सर्वे प्रसीदन्तु सुधियोऽन्येऽपि सज्जनाः ॥३॥

●

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

तन्त्रोक्त-शनिमन्त्रजप-विधानम्

विनियोगः– ॐ अस्य श्रीशनैश्चरमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, शनैश्चरो देवता, शं बीजम् आपः शक्तिः, श्रीशनैश्चरप्रीतये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः– ॐ ब्रह्मऋषये नमः, शिरसि । ॐ गायत्रीछन्दसे नमः, मुखे । ॐ शनैश्चरदेवतायै नमः, हृदि । ॐ शं बीजाय नमः, गुह्ये । ॐ आपः शक्तये नमः, पादयोः, इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यासः–ॐ शं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ शं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ शं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ शं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ शं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ शं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः, इति करन्यासः।

हृदयादिन्यासः– ॐ शं हृदयाय नमः । ॐ शं शिरसे स्वाहा । ॐ शं शिखायै वषट् । ॐ शं कवचाय हुम् । ॐ शं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ शं अस्त्राय फट् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

एवं प्रकारेण हृदयादिन्यासं कृत्वा, ध्यानं कुर्यात्।

ध्यानम्

ॐ नीलाञ्जनाभं मिहिरस्य पुत्रं
ग्रहेश्वरं पाश-भुजङ्गपाणिम्।
सुराऽसुराणां भयदं द्विबाहुं
भजे शनिं मानसपङ्कजेऽहम्॥१॥
नीलद्युतिं शूलधरं किरीटिनं
गृध्रस्थितं त्रासकरं धनुर्धरम्।
चतुर्भुजं सूर्यसुतं प्रशान्तं
वन्दे सदाऽभीष्टकरं वरेण्यम्॥२॥

एवं शनिं ध्यात्वा, मानसोपचारैः सम्पूज्य, जपं कुर्यात्।

जपमन्त्रः– ॐ शं शनैश्चराय नमः।

इति तन्त्रोक्त-शनिमन्त्रजप-विधानं समाप्तम्।

●

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

शनि के दस नाम

१. कोणस्थाय नमः । २. पिङ्गलाय नमः ।
३. बभ्रवे नमः । ४. कृष्णाय नमः ।
५. रौद्रान्तकाय नमः। ६. यमाय नमः ।
७. सौरये नमः । ८. शनैश्चराय नमः ।
९. मन्दाय नमः । १०.पिप्पलाश्रयसंस्थिताय नमः ।

शनि के जप का वैदिक मन्त्र

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शं य्योरभिस्रवन्तु नः।।

जप के लिए तन्त्रोक्त मन्त्र

ॐ शं शनैश्चराय नमः (जप संख्या २३,०००) ।

शनि गायत्री

ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि, तन्नो सौरिः प्रचोदयात्।

शनि के लिए दान-सामग्री

नीलम, तिल, उड़द, तेल, काला वस्त्र, कुरथी,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

लोहा, भैंस, काली गाय, काला पुष्प, जूता, छाता, कस्तूरी, सुवर्ण।

(दान का समय-मध्याह्नकाल)

भगवान् शनि को प्रसन्न करने के लिए, नीलम या काले घोड़े की नाल या नाव के कील की अँगूठी शनिवार के दिन धारण करना चाहिए।

●

भगवान् शनिदेव की आरती

जय श्री शनिदेवा, स्वामि जय श्री शनि देवा।
सब में आप शिरोमणि मानत सब देवा ।। टेक ।।
सभी ग्रहों से बढ़कर महिमा अति भारी।
सूरज पुत्र कहायो मानत संसारी ।।जयश्री०।।
क्रोध दशा में हो जाते हो तुम अनिष्टकर्ता।
राजी हो बन जाते सब ही के दुःखहर्ता ।।जयश्री०।।
विक्रमादित्य राजा जी ने भूल करी भारी।
साढ़े साती में भुगता राजा ने विपदा भारी ।।जयश्री०।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

सब में आप प्रबल हो जग में महिमा है तव भारी ।
धन-सम्पत्ति सुख देवो कर दो सुखियारी ।।जयश्री०।।
शनिवार है वार आपका पूजत सब नर-नारी ।
दान-मान बहुत करते प्रेम सहित भारी ।।जयश्री०।।
श्रीशनिदेव की आरती जो कोई नर गावे ।
'शिव' कहते निश्चय ही सो नर शनी दया फल पावे ।।
जय श्री शनिदेवा, स्वामि जय श्री शनि देवा ।।

इति शनिदेव की आरती समाप्त ।

●

पुस्तक प्राप्ति-स्थान

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी-१

मुद्रक : *भारत प्रेस*, कचौड़ीगली, वाराणसी-१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

olic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

हमारे यहाँ की प्रकाशित पुस्तकें मँगाकर लाभ उठावें

मानसागरी भा.टी.	100.00	यज्ञ मंत्र संग्रह भा.टी.	200.00
भावकुतूहल भा.टी.	75.00	प्रभुविद्याप्रतिष्ठार्णव भा.टी.	
वृहज्जयोतिषसार भा.टी.	75.00	(सर्वदेवप्रतिष्ठामयूख)	200.00
जातकाभरणम् भा.टी.	80.00	ग्रहशान्ति पद्धति भा.टी.	75.00
कर्मविपाक संहिता भा.टी.	80.00	विधानप्रकाश भा.टी.	75.00
लग्नचन्द्रिका भा.टी.	40.00	दुर्गार्चन पद्धति भा.टी.	100.00
ताजिक नीलकण्ठी भा.टी.	75.00	मन्त्र सागर भा.टी.	75.00
शीघ्रबोध भा.टी.	20.00	हनुमद्–रहस्य भा.टी.	60.00
स्त्रीजातकम् भा.टी.	25.00	गायत्री रहस्य	60.00
मुहूर्त चिन्तामणि भा.टी.	60.00	रसराजमहोदधि पाँचों भाग	150.00

हर प्रकार की धार्मिक पुस्तकों के मिलने का एकमात्र स्थान

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी–1

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh